अध्याय-1

1.1 परिचय

आदि शंकर एक ऐसे आदर्श राष्ट्र नायक थे जिन्होंने प्राचीन भारत के मर्म को छुआ था और इतिहास में पहली बार करोड़ों लोगों को वेदांत दर्शन के लिए प्रेरित किया था। में भारत के एकमात्र ऐसे राष्ट्र नायक हैं जिन्होंने इस देश की जमीन पर अद्वैत का प्रयोग किया और उसे सफल कर दिखाया। आदि शंकर के बिना भारत का समूचा जीवन दर्शन मौलिक और वंध्या है। जो ऊपर जमीन सिर्फ एक बार दिग दिग्दिगंत में लहराई हो वह अपने राष्ट्र नायक का नाम भला कैसे भूल सकती है।

- **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि**

  भारतीय अस्मिता राष्ट्रीय चेतना के आधार स्तंभ, सांस्कृतिक एकता और मानव मात्र में एकात्मता के उद्घोषक तथा अद्वैतवाद के अजेय योद्धा आदि शंकराचार्य के मां नर्मदा के तट पर दिव्य ज्ञान प्राप्त किया। किसी चमत्कार की तरह लगता है यह कि सुदूर केरल से 8 वर्ष का बाल सन्यासी 12 सौ वर्ष पूर्व 2000 किलोमीटर की पदयात्रा कर गुरु की खोज में गुरु गोविंद पाद के आश्रम में पहुंचा और केवल 4 वर्ष में ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात उपनिषदों ब्रह्म सूत्र एवं गीता प्रभाव से लिखा। अद्वैत मत की स्थापना के लिए भारत की यात्रा पर निकल पड़े "जीव ही ब्रह्म है" का उद्घोष करते हुए संपूर्ण भारत में सामाजिक विद्रूपता तथा पाखंड का नाश कर सामाजिक समरसता एकात्मता एवं सहजता का ध्वज फहराया। भारतवर्ष की प्राचीनतम आध्यात्मिक शक्ति के सतत प्रवाह को सशक्त रूप से अविरल प्रवाह मान बनाए रखने में आदि शंकराचार्य जी के प्रयास कार्य एवं दर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है अद्वैत दर्शन संपूर्ण विश्व को धर्म अंतरंग जाति लिंग प्रजाति भाषा आदि की विविधताओं से ऊपर उठकर एक सूत्र में बांधने का दर्शन है। आदि गुरु शंकराचार्य ने भारत को सांस्कृतिक

एकता में करने का महान कार्य किया। एक ऐसे समय जब देश और दुनिया को भौगोलिक रूप से ही वरन मानवीय संवेदनाओं को भी विभाजित करने का प्रयत्न किया जा रहा है तब आदि गुरु शंकराचार्य का जीवन एवं उनकी शिक्षाएं अत्यंत प्रासंगिक हो जाती हैं।

अट्ठारहवीं सदी के अन्तिम वर्षों 1763-1800ई में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध तत्कालीन भारत के कुछ भागों में संन्यासियों (केना सरकार , द्विजनारायन) ने उग्र आन्दोलन किये थे जिसे इतिहास में संन्यासी विद्रोह कहा जाता है।यह आन्दोलन अधिकांशतः उस समय ब्रिटिश भारत के बंगाल और बिहार प्रान्त में हुआ था। 18 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ईस्ट इंडिया कंपनी के पत्र व्यवहार में कई बार फकीरों और संन्यासियों के छापे का जिक्र हुआ है। यह छापा उत्तरी बंगाल में पड़ते थे। 1770 ईस्वी में पड़े बंगाल में भीषण अकाल के कारण हिंदू और मुस्लिम यहां वहां घूम कर अमीरों तथा सरकारी अधिकारियों के घरों एवं अन्न भंडार को लूट लिया करते थे। ये संन्यासी धार्मिक भिक्षुक थे पर मूलतः वह किसान थे, जिसकी जमीन छीन ली गई थी। किसानों की बढ़ती दिक्कतें, बढ़ती भू राजस्व, 1770 ईस्वी में पड़े अकाल के कारण छोटे-छोटे जमींदार, कर्मचारी, सेवानिवृत्त सैनिक और गांव के गरीब लोग इन संन्यासी दल में शामिल हो गए। यह बंगाल और बिहार में पांच से सात हजार लोगों का दल बनाकर घूमा करते थे और आक्रमण के लिए गोरिल्ला तकनीक अपनाते थे। आरंभ में यह लोग अमीर व्यक्तियों के अन्न भंडार को लूटा करते थे। बाद में सरकारी पदाधिकारियों को लूटने लगे और सरकारी खजाने को भी लूटा करते थे। कभी-कभी ये लुटे हुए पैसे को गरीबों में बांट देते थे। समकालीन सरकारी रिकॉर्ड में इस विद्रोह का उल्लेख इस प्रकार है:- "सन्यासी और फकीर के नाम से जाने जाने वाले डकैतो का एक दल है जो इन इलाकों में अव्यवस्था फैलाए हुए हैं और

तीर्थ यात्रियों के रूप में बंगाल के कुछ हिस्सों में भिक्षा और लूटपाट मचाने का काम करते हैं क्योंकि यह उन लोगों के लिए आसान काम है। अकाल के बाद इनकी संख्या में अपार वृद्धि हुई। भूखें किसान इनके दल में शामिल हो गए, जिनके पास खेती करने के लिए न ही बीज था और न ही साधन। 1772 की ठंड में बंगाल के निचले भूमि की खेती पर इन लोगों ने काफी लूटपाट मचाई थी। 50 से लेकर 1000 तक का दल बनाकर इन लोगों ने लूटने, खसोटने और जलाने का काम किया।"

यह बंगाल के गिरि सम्प्रदाय के संन्यासियों द्वारा शुरू किया गया था। जिसमें जमींदार, कृषक तथा शिल्पकारों ने भी भाग लिया। इन सबने मिलकर कम्पनी की कोठियों और कोषों पर आक्रमण किये। ये लोग कम्पनी के सैनिकों से बहुत वीरता से लड़े।

इस संघर्ष की खासियत यह थी कि इसमें हिंदू और मुसलमान ने कंधे से कंधा मिलाकर भाग लिया। इन विद्रोह के प्रमुख नेताओं में केना सरकार, दिर्जिनारायण, मंजर शाह,देवी चौधरानी, मूसा शाह, भवानी पाठक उल्लेखनीय है। 1880 ईस्वी तक बंगाल और बिहार में अंग्रेजो के साथ संन्यासी और फकीरों का विद्रोह होता रहा। इन विद्रोह का दमन करने के लिए अंग्रेजों ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी।

बांग्ला भाषा के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का सन १८८२ में रचित उपन्यास आनन्द मठ इसी विद्रोह की घटना पर आधारित है।

संन्यासी विद्रोहियों ने अपनी स्वतंत्र सरकार बोग्रा और मैमनसिंह में स्थापित किया । इनकी आक्रमण पद्धति गोरिल्ला युद्ध पर आधारित थी।

1.2 शोध कथन

आदि शंकराचार्य द्वारा रचित भाष्यो की शैक्षिक प्रासंगिकता;एक विवेचना।

1.3 शोध की आवश्यकता

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित कुछ मौलिक कारणों को चिंहित किया ह वे इस प्रकार हैं-

- **हमारी भारतीय** शिक्षा आज नैतिक मूल्यों रहित और निम्न गुणवत्ता वाली जिसमें समता और समावेशन का पूरणतः आभाव दिखाई पड़ता है ऐसी स्थिति में मानवीय मूल्यों के पोषण के लिए आदि शंकराचार्य और उनका दर्शन ही एक निदान हेतु युक्ति हो सकता है।
- अद्वैत वेदांत की समझ के बिना समतामूलक और समावेशी समाजिक संरचना का विकास संभव नहीं है।आज विश्व अपने संसाधनों का उपयोग हथियार, विस्फोटक सामग्री और विनाशकारी दवाइयों के निर्माण में कर रहा है साथ ही साथ सुरक्षा बलों को मजबूत करने में भी न जाने कितना अर्थ और ऊर्जा खपत कर दी जाती है, यदि यही ऊर्जा प्राकृति आधारित जीवनशैली के विकास में और मानव हित और धरती मां को संरक्षित करने में किया जाएं तो एक बेहतर विश्व की कल्पना साकार करने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा।
- आज मानवता जिन हालातों का सामना कर रही है कहीं ना कहीं यह मानवतावादी दृष्टिकोण से परे विभत्स वैश्विक षड्यंत्रों का परिणाम है उदाहरण के लिए जहां एक मानव अन्य के अस्तित्व को कि समाप्त करने के लिए इस स्तर पर विनाशक हैं **हिरोशिमा और नागासाकी** पर परमाणु हमला,गत् वर्षों से हम जिस प्रकार जलवायु

परिवर्तन,मानव तस्करी, महिलाओं के शोषण और अपराध छिन्न भिन्न होते मानवीय मूल्यों की लुप्त होने की प्रक्रिया निरंतर तीव्रता से देखा जा रहा है इनका निदान निश्चित रूप से इन्हीं भाष्यों और अद्वैत वेदांत दर्शन अध्ययन से ही संभव है।देश की शिक्षित प्रजा को मत-सम्प्रदाय-पन्थ आदि से ऊपर उठकर सामूहिक रूप से असरदार विरोध करना चाहिये जिससे उनकी हिम्मत पस्त हो जाये। देश की सभी समस्याओं का हल और उन्नति का मूल मन्त्र क्या है? इसका उत्तर बहुत सरल है और वह यह है कि देश के सभी लोगों के लिए एक समान व सत्य मूल्यों पर आधारित ऐसी शिक्षा जिससे देश के सभी मनुष्यों का पूर्ण बौद्धिक, मानसिक व आत्मिक विकास हो। अविद्या का नाम व विद्या की वृद्धि होनी चाहिये। यह सिद्धान्त धर्म, ज्ञान व विज्ञान के सभी क्षेत्रों पर लागू होता है। अत्यधिक स्वतन्त्रता व इसके नाम पर कुछ भी करने की छूट किसी को नहीं होनी चाहिये। हर कार्य मर्यादित हो और उसकी उपेक्षा व उल्लघंन दण्डनीय हो। यदि ऐसा होता है तो हमें सच्चरित्र, देश भक्त व समाज का सुधार करने की भावना रखने वाले बड़ी संख्या में युवक व युवतियां मिल सकती हैं जिससे देश की तस्वीर बदल सकती है। इसके साथ ही आजकल समाज में धर्म के नाम पर जो व्यापार व दुश्चरित्रता की घटनायें घट रही हैं एवं भोले-भाले लोगों का शोषण हो रहा है, उसको नियन्त्रित करने में भी सहायता मिल सकती है। यदि अन्धविश्वास व मिथ्या मान्यताओं के मकड़जाल की वर्तमान स्थिति को निर्मूल नहीं किया गया तो यह देश के भविष्य के लिए घातक हो सकती है।

- नईशिक्षा नीति 2020 शिक्षा का भारतीयकरण करने की पुरजोर वकालत करती है और बल देती है।
- राजा राम मोहन राय के अनुसार-यदि कोई छोटा बच्चा तर्क संगत बात कहता है तो उसे स्वीकार कर लिया जाना चाहिए और कोई बड़ा विद्वान अतारकिक बात कहे तो उसे न स्वीकार करने में हर्ज नहीं है अतः राजा राम मोहन राय भी आदि शंकराचार्य की शिक्षा और तर्क विज्ञान के आधार पर ही विभिन्न बुराईयों से लड़ें।

- आज संपूर्ण देश भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण के युग में विभिन्न पर्यावरणीय, समाजिक, राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय संघर्षों से जूझ रहा है ऐसे में महसूस किया जा रहा है कि इन सभी समस्याओं का समाधान सिर्फ आध्यात्मिक गुरूओं के पास ही मिल सकता है ऐसा ने भी स्वीकार किया है।
- शंकराचार्य की जीवनी पढ़ने से बच्चों में भारतीय मानवीय मूल्यों का सहज प्रवेश होगा उनके त्याग पूर्ण जीवन संयम कर्तव्यनिष्ठा ज्ञान के प्रति प्रेम आत्मविश्वास मातृत्व प्रेम एवं राष्ट्रप्रेम की भावना एवं सभी में एकात्मक तत्व के द्वारा संभव दृष्टि जैसे उत्कृष्ट मूल्यों से छात्र-छात्राओं का परिचय होगा जो कि उनकी व्यक्तित्व निर्माण में सहायक सिद्ध होंगे।
- आदि शंकराचार्य ही केवल एक मात्र शिक्षाविद् हुए हैं जिन्होंने मानव एवं मानवतावादी दृष्टिकोण से संपूर्ण खंड -खंड भारत को अखंड भारत के रूप में स्थापित किया।

- में भावनात्मक एकता सदा सें विद्यमान है अनुभूति की बिना शब्द भ्रमित करते हैं अद्वैत दर्शन को जीवन में अभिव्यक्त होना चाहिए।

- शंकराचार्य जी की तार्किक पद्धति से विद्यार्थियों को अवगत कराना चाहिए क्योंकि यह उनमें सौम्या ढंग से किसी पक्ष का विश्लेषण करने व समझने की प्रवृत्ति को विकसित करता है इसे शोध प्रविधि का भी एक आदर्श प्रारूप माना जाता है जिसकी प्रशंसा वैश्विक स्तर पर की जाती है भारतीय स्वभाव तार्किक होता है उसे अमरत्य सेन ने **"Argumentative Indian"** इंडियन नामक पुस्तक के माध्यम से व्याखित किया है।
- अद्वैत दर्शन सारी समस्याओं का समाधान साबित हो सकता है शिक्षक शासक माता पिता और संत मिलकर अध्यात्म पर आधारित समाज का नव निर्माण कर सकते हैं।
- अद्वैत दर्शन ही विश्व को विभिन्न प्रकार की समस्याओं से बचा सकता है।
- संवाद हीनता सबसे बड़ी समस्या है यदि आदि शंकराचार्य की जीवन दर्शन को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा तो नई पीढ़ी को वेदांत दर्शन से परिचित कराने का मौका मिलेगा ।
- संस्कृति की रक्षा करना साहित्य और कला का काम है उपनिषदों विरासत से नई पीढ़ी को परिचित कराना वर्तमान पीढ़ी का दायित्व है।

1.4शोध के उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नलिखित निर्धारित उद्देश्य इस प्रकार है-

1. **आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा रचित भाष्यो की शैक्षिक प्रासंगिकता का अध्ययन करना।**
2. **अद्वैत दर्शन एक समाधान के रूप में राष्ट्रनिर्माण एवं विश्व कल्याण हेतु अध्ययन करना।**

3. नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के भारतीयकरण के संप्रत्यय का अध्ययन करना।

1.5 परिभाषाएं

भाष्य, शैक्षिक प्रासंगिकता

भाष्य-संस्कृत साहित्य की परम्परा में उन ग्रन्थों को भाष्य (शाब्दिक अर्थ - व्याख्या के योग्य), कहते हैं जो दूसरे ग्रन्थों के अर्थ की वृहद व्याख्या या टीका प्रस्तुत करते हैं।[1] मुख्य रूप से सूत्र ग्रन्थों पर भाष्य लिखे गये हैं। सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र, पदैः सुत्रानुसारिभिः। स्वपदानि च वर्ण्यन्ते, भाष्यं भाष्यविदो विदुः ॥ (अनुवाद : जिस ग्रन्थ में सूत्र में आये हुए पदों से सूत्रार्थ का वर्णन किया जाता है, तथा ग्रन्थकार अपने द्वारा पद प्रस्तुत कर उनका वर्णन करता है, उस ग्रन्थ को भाष्य के जानकार लोग "भाष्य" कहते हैं।) भाष्य, मोक्ष की प्राप्ति हेतु अविद्या (**ignorance**) का नाश करने के साधन के रूप में जाने जाते हैं। वेदों, ब्राह्मणों, एवं आरण्यकों का सायणाचार्य कृत भाष्य, प्रस्थानत्रयी (उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र एवं गीता) का शंकराचार्य कृत भाष्य और पाणिनि के अष्टाध्यायी पर पतंजलि का व्याकरणमहाभाष्य आदि कुछ प्रसिद्ध भाष्य हैं।

शैक्षिक प्रासंगिकता-

प्रासंगिकता अर्थ यह है कि कोई सूचना, क्रिया या चीज किसी मामले या मुद्दे से कितना सम्बद्ध है। उदाहरण के लिये मुकद्दमों में बहस के दौरान या साक्ष्य के लिये प्रासंगिकता को बहुत महत्व दिया जाता है और जो चींजे मुद्दे से हटकर या

असम्बद्ध लगती हैं उनके बारे में कह दिया जाता है कि वे प्रासंगिक नहीं हैं। शैक्षिक प्रासंगिकता का सीधा संबंध शिक्षा सरोकार से जुड़ा है।

1.6 शोध प्रश्न

1. आदि शंकराचार्य के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता आज भी महत्वपूर्ण है और राष्ट्रीय एकता में इसकी क्या भूमिका है?
2. भाष्यो के अध्ययन से जीवन को सार्थक और सफल किया जा सकता है ?

1.7 शोध कार्यविधि

शोध की विधि

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में ऐतिहासिक एवं दार्शनिक विधियों का अनुसरण किया जायेगा। वर्णनात्मक एवं विश्लेषण संश्लेषण शैली प्रयुक्त होगी। मानव ने जो कुछ अपने अतीत से प्राप्त

किया है, इतिहास उसका ठोस प्रमाण है। वैदिक ग्रन्थों एवं संहिताओं के उद्धरण लिए जायेंगे।

इतिहास एक विशेष समय एवं स्थान पर घटित मानव जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का एक सत्य, सुनियोजित एवं परीक्षित अभिलेख होता है। इतिहास का प्रयोग, भूतकाल की पृष्ठभूमि में वर्तमान को समझने एवं भविष्य के लिए उचित निर्णय लेने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त शोधकर्जी द्वारा अध्ययन की विभिन्न उपविधियों के प्रयोग का निर्णय लिया गया है। जहां पर जिस विधि की आवश्यकता होगी, उसी के अनुरूप उस विधि का प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन के विभिन्न चरण

द्वितीय स्त्रोत - द्वितीयक स्त्रोत से अभिप्राय अन्य विद्वानों द्वारा उपनिषदों पर दिये गये

व्याख्यान, किये गये शोध एवं पत्र-पत्रिकाओं के लेख आदि है।

शोध की परिसीमाएं -

प्रस्तुत शोध ग्यारह उपनिषदों के शैक्षिक दर्शन पर आधारित होगा। 108 उपनिषदों में से दस वही उपनिषदें हैं। जिन पर आदि शंकराचार्य द्वारा लिखा गया भाष्य उपलब्ध है।

अभिलेख/उपकरण -

प्रस्तुत शोध हेतु आवश्यक प्रदत्त संकलन उपनिषदों से सम्बन्धित प्राथमिक एवं द्वितीयक

स्त्रोतों पर आधारित होगा। प्राथमिक स्त्रोत संस्था अथवा घटना से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रखते हैं।

इसके अन्तर्गत मूलग्रन्थ - वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, सूत्रस्मृति आदि ग्रन्थों का उपयोग

किया जायेगा।

सम्बन्धित पुस्तकों एवं अभिलेखों को निम्नलिखित संस्थाओं से प्राप्त किया जायेगा।

प्रस्तुत शोध कार्य गुणात्मक अनुसंधान की संरचना है अतः यह विष्लेषणातमक और विवेचनात्मक अनुसंधान प्रकार है।

1.8शोध की परिसीमाएं- यह शोध कार्य आदि शंकराचार्य द्वारा रचित भाष्यों तक ही सीमित है।

1.9अध्यायीकरण

- परिचय
- साहित्य पुनरावलोकन
- शोध के निष्कर्ष

- **उपसंहार**
- **संदर्भ सूची**